मांत्रिक भजन दीपिका

(बीज मंत्रन हुन्द व्यस्तार)

जया सिबू रैना

काश्मीर शक्तिवाद प्रकाशन, अजमेर

मांत्रिक भजन दीपिका

(बीज मंत्रन हुन्द व्यस्तार)

प्राच्या विद्या संस्कृति प्रतिष्ठान, अजमेर
के सौजन्य से प्रकाशित

द्वारा

डॉ. चमन लाल रैना
संरक्षक काश्मीर शक्तिवाद सम्मान, अजमेर

लेखिका

जया सिबू 'रैना'

प्रायोजक : राकेश रैना

प्रथम संस्करण : 1998

प्राप्ति स्थान : डॉ. अभिनव रैना, 2- प्रोफेसर्स क्वार्टर्स, डी. ए. वी. कॉलेज, अजमेर।

मुद्रित : सन्त एन्सलम्स प्रेस, केसरगंज, अजमेर।

मूल्य - 25.00 रुपये मात्र /-

विषय सूची

बीजाक्षर के सम्बन्ध में ....

मंत्र अथवा बीजाक्षर साधना काश्मीर की उपासना पद्धति में एक विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतीक है। **बीज रूपी अक्षर,** अजर भी है और अमर भी। मन्त्र नित्य एवं शाश्वत है। बीजाक्षर साधना मंत्र रूपिणी संवित् शक्ति के साथ अर्थ प्रदायिनी होती है। अत: संवित् मंत्र बीज रूप में अवतीर्ण होकर योग की ऊष्मा बन जाती है। इस संसार में मानसिक, प्राणिक शक्तियाँ आध्यात्मिक शक्ति के ही स्पन्दन है। विश्वरूपिनी महामाया विद्या एवं अविद्या रूपिणी है। इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य मन, प्राण एवं शरीर के सम्बन्ध से ही सच्चिदानन्द का साक्षात्कार पा सकता है। इस में प्रवृति भी है और निवृति का समावेश भी। अन्तरात्मा में निहित चक्रराज श्रीचक्र इस अर्थ में सनातन है कि वह मानवीय शरीर में श्रीविद्या की सभी सम्भावनाएँ वहन करता है, क्योंकि श्रीविद्या का विकास अन्नमय - प्राणमय - मनोमय - विज्ञानमय एवं आनन्दमय कोश के साथ ही सम्भव है।

'अहं ब्रह्मास्मि, सोऽहं, चैतन्यमात्मा, प्रज्ञानं ब्रह्म' साधना के सिद्धान्त हैं। उसमें समष्टी एवं व्यष्टि निहित है। आत्मा जन्म और मृत्यु से मुक्त है, जीवात्मा का परमात्मा अथवा शुद्ध चैतन्य विश्वव्यापी के साथ सायुज्य होना अनिवार्य है, इसी दिशा में श्रीमती जया सिबू ने मांत्रिक भजनों द्वारा अपनी अनुभूति को व्यक्त किया है। इसमें काश्मीर मण्डल के इष्टदेवीयों, श्री चक्रेश्वर, नन्दिकेश्वर एवं गणेश, सूर्य, महादेव के प्रति अमीप्सा भी है और नतमस्तकता भी। विस्थापित होने के कारण अब श्रीमती जया अपने तीर्थस्थानों, शक्तिपीठों एवं साधना स्थलों पर नहीं जा सकती है - इस बात की तड़प उनके मन में है जो इस भजन-संग्रह में व्यक्त हुई है।

अन्त में जया जी ने ललद्यद, अलख साहिबा रूपा भवानी, पंडित कृष्णाजू कार, ऋषि पीर, ईश्वरस्वरूप स्वामी जी के जीवन एवं

साधना पद्धति के महत्त्व पर भी विचार प्रकट किये।

जया जी का जन्म वास्तव में कादि विद्या के उपासना गृह में हुआ है, जहाँ उसे श्री विद्या पूजा, चण्डी पूजा पैतृक दाय के रूप में मिली है। फिर विवाह पश्चात् भी शैवी साधना का ज्ञान अपने श्वसुर पंडित निरंजन नाथ रैना से मिला है। प्रस्तुत पुस्तक में श्रीमती जया का समग्र जीवन दर्शन भजनों - गीतों के रूप में अभिव्यक्त हुआ है जिससे उनके कश्मीर और कश्मीर की दार्शनिक संस्कृति के प्रति गहरे लगाव का भावात्मक एवं काव्यात्मक दिग्दर्शन मिलता है। एक वाक्य में यह संग्रह उनकी साधना की पुष्पाञ्जली है।

पुस्तक में मूलत: बीजमंत्र को कश्मीरी काव्य में रूपान्तरित कर भावी पीढ़ी के लिए धरोहर के रूप में प्रकाशित किया गया है।

मैं, अमेरिका में निवास करने वाले राकेश कमल तथा अल्पना राकेश का भी धन्यवाद देता हूँ जिनकी प्रेरणा से यह पुस्तक अब प्रकाशित की जा रही है। वे भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को जानने के इच्छुक है।

मैं सेण्ट एन्सलम्स प्रेस, केसरगंज अजमेर के श्रीमान् जितेन्द्रसिंह का आभारी हूँ, जिन्होंने कश्मीरी भाषा का ज्ञान न होते हुए भी सम्पूर्ण पुस्तक को तन्मयता से, भावना से कम्प्यूटरीकृत किया। अत: मैं उनका आभारी हूँ एवं आशा करता हूँ कि भविष्य में प्रकाशित होने वाली पुस्तक **वाक्** को भी इसी प्रकार पूर्ण सहयोग से कम्प्यूटरीकृत करेंगे।

चमन लाल रैना

मूलत: गुंडी अहलमर श्रीनगर

वर्तमान : प्रोफर्स क्वार्टर्स

डी. ए. वी. कॉलेज, अजमेर।

ॐ श्री गणेशाय नमः

आदि देव गणपति

नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्त धराय च।

नमः ईश्वर पुत्राय श्री गणेशाय नमो नमः॥

ग्यान गणपत गनीश छु यूगुॅ बलुक मूलादार।

ॐ ग्लूं गं गणपतये नमः छु ज़गतुक आदार।

वज़रुॅ रूॅफ अथ बीज मंत्रस म्योन नमस्कार॥

अऽमिस एकदन्तस वक्रतुण्डस आऽसिन जय जयकार।

ऋद्धि तुॅ सिद्धि छय जोरि मारान बऽनिथ सलाहकार॥

ॐ ग्लूं गां गणपतये नमः ..., 1

अमरनाथ हिमालुॅ थंगिस प्यठ छु चोन साख्यातकार।

यऽति नेरान ग्यान-गंगा, करान बुतुॅराऽच् सबज़ार॥

तऽति सानि-पंचतरणी, तुॅ व्यतस्तायि सोन नमस्कार।

गणपत छु पानुॅ वेद व्यासुन बऽन्योमुत कलमकार॥

ॐ ग्लूं गां गणपतये नमः ..., 2

महाभारत लीखिथ को'रुथ ज़गतस पानुॅ वो'पकार।

'हेमज़ासुतं बुजम्' आदि मंत्र छु पूज़ायि हुन्द व्यस्तार॥

गणपतयार स्यद्ध - पीठस छु महागणीशा! लगान चोन दरबार।

विनायक चो़रम तुॅ गणचो़'दाह यियुॅतन बारम्बार॥

ॐ ग्लूं गां गणपतये नमः ..., 3

छुख '**गणेश ईश नन्दन**' प्रज़लवुन ताजदार।
मूशुक छु गगुर वाहन चोन, बासान अऽसि चमत्कार॥
आर यियुँतनय सोनुय करान छि नऽमिथ ज़ॉरुपार।
डीड्य मुचरावनस छुय ना **आदि देवा** वुनिति वार॥

ॐ ग्लूं गां गणपतये नमः ..., 4

लम्बूदरा! बालचऽन्द्रा! धूम्रवरना! द्यू अऽसि पानुँ तार।
स्वमनुँ ह्यमोय नाव चोन, चऽलि अऽसि ति अंधकार॥
हारुँ-परबतचुँ ढेडि तल बऽनिथ **शारिकायि** हुंद पहरुँदार।
गणेश सहस्त्रनामस मंज़ छु चोन ग्यानुँ भण्डार॥

ॐ ग्लूं गां गणपतये नमः ..., 5

क्याह सनाह प्रकरम दिनस छ्युम ना वुनिति वार।
चोन बृहद् - आकार वुछुम, छुख चुँ पानुँ निराकार॥
द्वद-रत्नदीप कि्थुँ पाऽठ्य बावय, मेलम कऽति गणपतयार।
'जया' लांगि सेन्दुँर पानय, वाख तुँ व.चुन कर स्वीकार।

ॐ ग्लूं गां गणपतये नमः ..., 6

ग्यान गणपत गनीश छु यूगुँ बलुक मूलादार।
ॐ ग्लूं गं गणपतये नमः छु ज़गतुक आदार।

श्री राज्ञी

(माऽज राऽगिन्या)

चतुर्भुजां चन्द्रकलार्ध शेखरां सिंहासनस्थां भुजग्मेपवीतीम्।
पाशांकुशाम्बुरूह खड्गधारीणीं राज्ञीं भजे चेतहि राज्यदायिनीम्॥

लऽगिमुॅतुॅ छि अऽसि दूर स्येकि शाठन।
राऽगन्या कन थवि सानि पूज़ायि तुॅ पाठन॥
दूर क्या ज़ि माऽज त्राऽवथस —
तापुॅनि चंजि क्याज़ि थाऽवथस॥
वालुॅ वाशि मंज क्याज़ि लाऽजथस।
गऽरि-न्यबर क्याज़ि बुॅय कऽडुॅथस॥ लऽगिमुॅतुॅ छि 1

बावुॅ बऽख्ती मंज़ करतम स्यज़राह।
त्रावतय माऽज शिहिज पननी नज़राह॥
परनावतम 'रां राज्ञीं क्लीं' पनुन मंत्राह॥
तुमिमुलि नागुक करनावतम् दर्शुनाह॥ लऽगिमुॅतॅ छि 2

तुलिमुलि छखुॅ हय माऽज राऽगिन्या तती।
चाऽनि बऽखुॅतुॅ छि ईरुॅ गाऽमित यती॥
न्यथ प्रभातन करान चाऽन्य् साऽरि स्तुती।
ओश हारान कऽति करव चाऽन्य भक्ती॥ लऽगिमुॅतॅ छि 3

करमस क्याह ओस अऽसि लीखिथ।
छा मुमकिन ... , ह्यकोय ब्येयि मीलिथ॥
चे़' प्रॅछ़नय अऽस्य् आयि नीरिथ।
वोॅन्य सोन बख्त थवि पानुॅ शीरिथ॥ . लऽगिमुॅतॅ छि 4

ज़ेठ ज़ूनपछ आऽठम आयख अवताऽरी।
अषृ भुज़ा माऽज छख सुँहस सवाऽरी॥
अरदुँ च़ऽन्द्र कलायि सान बऽनिथ खुमाऽरी।
पाश-खड्ग-अंकुश सान चुँय कुमाऽरी। लऽगिमुँतँ छि 5

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं चुँ - पानय परनावतम।
स्व प्रकाश पनुन पानय में हावतम॥
रंगवुन रंग पाऽन्य् पानय वुछनावतम।
ब्रह्माण्डुक मूल '**ब्यन्द**' पानय .चुँय हावतम॥ लऽगिमुँतँ छि 6

दिल छुम करान, वुछँहऽ ब्येयि तुलमुला।
करुँहाऽ साधना परुँहाऽ चाऽन्य लीला।
वैष्णवी शक्ती, नारायणी .चुँय सुशीला।
ऐन्द्री पानुँ .चुँ नागस बावय पम्पोशमाला॥ लऽगिमुँतँ छि 7

न्यथ करान आऽस्य पूज़ा तथ नागस।
शिशुरुँनुँ छऽटि मंज़ वसान आऽस्य मागस॥
रत्नदीप हयथ द्वद बावान चाऽनिस स्थानस।
ऱ्वनि श्रौन्य् वज़ान ओस तथ बोन्य् शेहजारस॥ लऽगिमुँतँ छि 8

जाय चाऽन्य '**श्रीपीठ**' तथ पऽज़ि जाये।
भूतीश्वर बऽनिथ शिव यऽति मारान ग्राये॥
बऽखुँतुँ प्रकरम दिवान लोलुँ सान चानि पूजाये।
भाव बावान प्रथ दोह लोलुँ तय माये॥ लऽगिमुँतँ छि 9

दुर्गा छख चुँ सर्वशक्तिमान पानुँ महामाया।
राज्ञी सहस्त्रनाम छु सहस्त्रदलुँच श्वद्ध काया॥
यऽति नच़ान '**लाकिनी**', कायनावान पानुँ माया।
'**साकिनी**' बऽनिथ पानुँ रऽटुँथ नागस मंज़ जाया॥ लऽगिमुँतँ छि 10

.चुँ विश्वरुपिनी लयस मंज़ थवान वेद माता।
गायत्री चुँ पानुँ मुख्यदिनुँ वाजे'न ज्ञान दाता॥
अनाहत च्ऽक्रस मंज़ ठुँहरिथ 'राग्यनी' माता।
करान छि नमस्कार चे'य, सनत्वष्ट रोज़ ज़गत् माता॥ लऽगिमुँतँ छि 11

जया-विजया चे'य सूँत्य पकान द्यन तय राथ।
शिव शङ्कर, भूतेश्वर दिवान छुय साथ॥
महिषासुरमर्दिनी .चुँ पानय, राख्यसन दिवान माथ।
राजकरवुँनु राजरेन्य्, पानुँ पीठीश्वर छुय नाथ॥ लऽगिमुँतँ छि 12

'पुरुहित-प्रिया-कान्ता' बऽनिथ इतम पानय।
नवार्ण मंत्रुँच राज़बावथ बुँ नय केंह ज़ानय॥
'वीर-भू-वीर-माता' सान हावतम सु स्थानय।
यति अन्ति समयस मेल्यम निर्वाणुक व्यमानय॥ लऽगिमुँतँ छि 13

प्रह्लादनी - महामाता छु चोन नाम स्मरण।
रावण सुँज़ि सनिवारि मंज़ ओस चोन आसन॥
जाय वुछिथ तुलुँमुलि, नऽखि तुजनख हनुमानन।
ज़ून पछ आऽठम दरबार लगान, वुहूँर - वर्ययन॥ लऽगिमुँतँ छि 14

रंग रंगनाऽविथ .चूँय पानुँ रंगवुँनी।
निर्गुणी - निष्कली .चूँय साख्यात राऽगिनी॥
मूलादाऽरिनी, शिवाऽनी पानुँ मूख्यदायिनी।
'जया' छय पूज़ान छख विमर्श - रुपिणी॥ लऽगिमुँतँ छि 15

ज्वाला देवी

(ज़ाला भगवती)

ज्वालिनी ज्वाला चुँ पानुँ माऽज ज़ाला।
ख्रिवि पीठस प्यठ शूबिथ पानुँ अगनुँच माला॥
दज़वुँनुँ रेह चाऽन ज़ोतेयि प्यठ ख्रिव्र तीर्थस।
ग्रज़वुन यूग **'शब्द'** ग्रेज़्यव तथ च्यथ क्वण्डस॥
यऽति बीज मंत्रव गाह त्राऽव **शिला** खण्डस।
ज़ाला ज़ोतान छय तऽति बिहिथ प्रज़लवुँनिस परबतस॥ 1

ज्वालिनी ज्वाला ...,

भस्म छख करान हुँतशीशस पनने स्वभावय।
चाऽनिस च्यथ अग्नुँ क्वण्डस बुँ क्या हुमय॥
लोल शब्दव दुँपुँ दीप पानय बुँय ज़ालय।
ग्यान रूफुँय पनुन व्यगुँन्यान बुँ आलवय॥ 2

ज्वालिनी ज्वाला ...,

हारुँ जून पछ च्वदुँश सपद्येयख अवतीरन।
इष्ट दीवी पानुँ बोज़ सोन लोल-कीरतन॥
हारने ग्राये तापने चन्ज़े करान छिय नाम स्मरण।
अग्नस अग्नाह ज़ाऽलिथ करान चोन हवन॥ 3

ज्वालिनी ज्वाला ...,

छख करान ग्रास वखतुँ-वखतय त्रिज़गतस।
'स्वाहा' शब्दुँ सूत्य प्रेकाश मेलान भक्तस॥
ज़ाला सहस्त्रनाम पऽरिथ ईकुत करान वख्तस।
ज़ालवुँनुँ **चऽण्डी** छख बिहिथ प्रलुँयुँकिस तखतस॥ 4

ज्वालिनी ज्वाला ...,

ताण्डव वुछुम पानुँ भस्मीबूत गव शव।
शिव छुय सूॅत्य सूॅत्य, असि कुन कन थव॥
ख्रिवि नागस प्रज़लवुॅनुँ छि चाऽन्य् प्रव।
चाने अऽग्नय **ज्वाला पिंगल लोचनुक** '**हुम**' प्यव॥ 5

ज्वालिनी ज्वाला ...,

बुतराऽच़ मंज़ **नारुॅ रूॅफ** छख फऽहलान।
शब्दस मंज़ '**शब्द ब्रह्म**' छख पानुँ व्यछ़नान॥
चाने 'आहवऽच़्व' पाफ साऽरी पानय म्वकलान।
यूग अऽग्नस मंज़ शाहुॅच खस वस छऽनुँ बासान॥ 6

ज्वालिनी ज्वाला ...,

चान्ये ध्यानय अग्ना नाऽडी छम शोलान।
सूर्या नाऽडी सूॅत्य रे'ह म्याऽन्य् ज़ोतान॥
माऽतृकायन मंज़ श्री ज्वाला बऽनिथ कायान।
'**जया**' छय लोलुँ पोश अग्नस मंज़ लायान॥ 7

ज्वालिनी ज्वाला ...,

शब्द ब्रह्ममयि! स्वच्छे देवि त्रिपुरसुन्दरि।
यथा शक्ति जपं पूजां ग्रहाण परमेश्वरी॥
नमामि यामिनी नाथ लेखालंकृत कुन्तलाम्।
भवानी भव-सन्ताप-निर्वापण सुधानदीम्॥

श्री शारिका

माता छख **अष्टादश बों॑ज़्ा** शाम सों॑न्दरी।
शिव-शक्ति एक रुपॅपिनी पानॅु भुवनीश्वरी॥
वनान चे॑ साऽरी श्रीयुक्त राज़ॅु राऽज़ीश्वरी।
माऽतृकायन मंज़ कायवॅुनॅु पानॅु काऽमीश्वरी॥ 1

शाक्त यूगॅुच पानॅु शोलवॅुनॅु यूगीश्वरी।
ओ३म शब्द प्रणवान प्रज़लवॅुनॅु पूर्णेश्वरी॥
ह्रीं बीजस सगवान बऽनिथ मूलादाऽरी।
चोन च़ऽखॅुरॅु छु **ब्यन्द त्रिकून तॅु वृत आकाऽरी**॥ 2

हार परबतस बदि द्राव **श्री च़ऽकरुक** आकार।
सगुण चऽखॅुरॅु सगनोवथन बऽनिथ पानॅु साकार॥
जूत्य् ज़ाऽलिथ ज़ोतनोवथन सु च़्यथ न्यराकार।
प्रकाश - विमर्शस म्युल गव, बुछमख माऽज टाकार॥ 3

जाय चाऽन्य **श्रीपीठ** यऽति ग्रज़ान सहस्त्रॅुआर।
षट चऽकरॅु बीदन करनुक छुय चोन अधिकार॥
शारिका सहस्त्रनामस मंज़ छु चोन मंत्र संचार।
माऽज व्यछ़नावतम आकार-गव-न्यराकार॥ 4

शब्दमयी शक्ती हॅुन्ज़ छख पानॅु **सरस्वती**।
महिषासुर-मर्दिनी बऽनिथ पानॅु च पार्वती॥
शिवदूती - काऽली - करालिनी छख मधुमती।
गायत्री-सावित्री - वेद माता .चॅु **आद्या शक्ती**॥ 5

नवन च़ऽखरन मंज़ दीवी .चॅु **शाम सों॑न्दरी**।
समवित् स्पन्द मार्गस ईकनाऽविथ पानॅु ऐन्द्री॥
प्राणस अपानस, व्यानस समानस मंज़ महोदरी।
त्रन भवनन तारवॅुनॅु **त्रिपुरा किशोर सों॑न्दरी**॥ 6

स्यद्ध-पीठस प्यठ वास चोन बऽनिथ सर्वीश्वरी।
बिन्दु-त्रिकोण - वसुकोण ह्यथ चुँ पानुँ ध्याऽनीश्वरी॥
दशार-युग्मस मंज़ वुछमख राज़ुँ राऽज़ीश्वरी।
शेरि हय लागय सेंदरि ट्योक, माऽज माऽहीश्वरी॥ 7

खसवुँनिस वसवुँनिस त्रिकूनस मंज़ छु चोन निवास।
ब्रह्मा - विष्णु - महेश्वर करान अऽथि अन्दर वास॥
पानुँ शिवशक्ती हुन्द च़्रऽक्रस मंज़ आभास।
चे़ ‍न्येबर नुँ केंह, .चें प्यठ छुम व्येशवास॥ 8

हुम-फट शब्द बऽनिथ ताण्डव करनोवथन महीश्वर।
क-ए-ई-ल-ह्रीं सान ग्रज़नोवथन सु ज़गथ ईश्वर॥
ह-स-क-ह-ल-ह्रीं शब्दस मंज़ छु चऽक्रीश्वर।
स-क-ल-ह्रीं नादस मंज़ बऽनिथ अर्धनाऽरीश्वर॥ 9

टाकार वुछिम **शारिका** लागान तऽति दरबार।
यति हुर्य आऽठम दोह प्रखटान '**श्री**' आकार॥
आं-शां-फ्रां शारिका छख माऽज पानुँ साकार।
पादन चान्यन परन प्यमय, पूज़ुँ म्याऽन्य कर स्वीकार॥ 10

शेरि हय लागय लोलुँ पोशन हुन्द दस्तार।
'**अहम्**' शब्द क्या छु, छुम नुँ काँह अहंकार॥
शून्य अवस्थायि चानि वनान ब्रह्मद्वार।
यति नच़ान **शारिका** बऽनिथ **शिलातन** साकार॥ 11

शारिका छख नव च़ऽक्रन हुँन्ज़ नवद्वार।
मूल प्रकृति पानुँ बनेमुँच़ छि त्रिवलयाकार॥
शब्द शक्ति अग्यानस करान छख समृहार।
'**जया**' छि श्री शारिकायि सोज़ान पोशुँ अम्बार॥ 12

वेद माता गायत्री

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् - सवितुर् वरेण्यं,
भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः छख पानुॅ वेदमाता।
आधार भूता छख .चुॅय ग्यानदाता॥
'ओ३म' छु प्रणव, यि छु गऽनिरावुन।
सृष्टि-स्थिति-संहार पानस मंज छु सारुन॥
खारुन तुॅ वालुन ध्यानस मंज दारुन।
यूग दारनायि मंज ल्वलि ललनावुन॥ 1

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

भूः गऽयि पृथ्वी, नाव छुस धात्री।
माता छख सत्व रुॅफ सावित्री॥
ब्राह्मी शक्ती नाव चोन विधात्री।
आत्मा स्वरूपस मंज़ नच़वुॅन गायत्री॥ 2

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

भुवः गव आत्मदीवुक सु स्यज़राह।
यति आकाश ततुवक छुय श्वज़राह॥
प्रकाश रूॅपय सिर्य सुॅज़ नज़राह।
न्यर्मल सोरूय सपदान पोज़ पज़राह॥ 3

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

स्वः छि व्याहृती, दैवी-शक्ति - पयस्विनी।
स्वप्न-सुशुप्त-जाग्रतुॅच नच़वुॅन्य् कुण्डलिनी॥
सिद्धी दिनुॅ वाज्येन पानुॅ **वाक्** शब्दरुपिनी।
आत्मदीवस मंज़ फोलवुॅनुॅ विमर्शनी॥ 4

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

गायत्री मंत्रॅक छि यिम त्रे मूलादार।
ज्ञानदायिनी **वेदमाता** आमुँच़ टाकार॥
पंचमुखी गायत्री छख पानुँ साकार।
तैत्रीय आरन्यकुँच वखनय छि अऽमिच आदार॥ 5

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

'**तत्**' छु पानुँ परमेश्वर निष्कल न्यराकार।
यच्छ़ायि किन्य ग्यान स्वरूप बऽनिथ मूलादार॥
'तत्' सविता - ग्यान ग्याता तुँ न्यर विकार।
'तत्' छु प्रणव स्वरूप, **तत् पुरुषस** नमस्कार॥ 6

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

'**सवितु**' छु सिर्य पानुँ प्रेकाशवान।
वोदुँय तुँ अस्तुक विमर्श हावान॥
सृष्टि हुँद आगुर, क्याह छु ग्यानवान।
आदार ज़गतुक, छु '**सवितु**' मुर्तिमान॥ 7

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

'**वरेण्यम्**' छि वेदमाता पानुँ गायत्री।
योसुँ वरनुँ वाज्येन देवमाता सावित्री॥
अऽमिस नमान, छि ज़ोतान सिद्धि धात्री।
पूज़ि लायख यि माता छि अधिष्ठात्री॥ 8

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

'**भर्गो**' ज़ोतवुँनॅ पानुँ ज्योतिस्वरूप ज़ाला।
नच़वुँनुँ लोलवुँनुँ बऽनिथ स्वयऽ दीपमाला॥

गायत्री मंत्रुँच ज़पुँन छि कर माला।

शोडशी पानुँ आमुँच़ बऽनिथ वरदा बाला॥ 9

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

'देवस्य' दिवताहन हुँन्जुँ प्रव छि आसान।

दिव्य ज्योति ध्यान दारनायि मंज़ बासान॥

सत् - चित् - आनन्द स्वरूप पानुँ वो´लसान।

इडा - पिङ्गला - सुषुम्ना ज़पाजपस मंज बसान॥ 10

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

'धीमहि' — प्रार्थना करान च़्यथ रुपिनी माताये।

बुद्धि प्रकाश मेल्यम पानय श्वज़ि वासनाये॥

च़्यथ म्योन फो´लितन विमर्श चे काये।

विज़ि विज़ि गायत्री वुछन प्रथ जाये॥ 11

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

'धियो' रुपिनी आंत्मविद्या पानय प्रतिभा।

अऽथ्य् अन्दर ऊर्जा शोल वुँनुँ पानुँ आभा॥

स्वधा-स्वाहा छख प्रज्ज्लवुँनुँ पानुँ अम्बा।

'प्रज्ञायि' सूँत्य पानु परजुँनाव - नुँच़ प्रभा॥ 12

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

'यो नः' स्व दीवी शक्ति छख नुँ दूर।

ग्यानस - विग्यानस पुशविथ करान पानुँ पूर॥

अग्यानस साऽनिस करान छि गायत्री सूर।

स्व प्रज्ञा शक्ति कऽरितन द्वैयतभावस ति दूर॥ 13

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

'**प्रचोदयात्**' प्रेरणा दिनुँ वाजें न गायत्री करान कल्याण।
आद्या शक्ति गायत्री हुन्द करान छि अऽस्य् ध्यान॥
हृदयस मंज़ स्वरान गायत्री, खारान प्राण - अपान।
व्यान - उदानस म्युल गछ़ान बनान समान॥ 14

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

कुम्भक - रेचक - पूरक छि क्रमुँच शक्ती।
चो़वुहव अछरन सान छि चाऽन्य बऽखती॥
ऋक्, यजुर, सामवेदस मंज छि चाऽन्य स्तुति।
पानुँ विश्वामित्र र्‌यशुँ वऽनिमुँचँ चाऽन्य व्युत्पती॥ 15

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

आयातु वरदा देवी त्रि अक्षरे ब्रह्मवादिनी।
श्रुति - स्मृति चुँ पानय छख मोक्षदायिनी॥
ग्यानुँच छख जुँ.चुँ पानय वरदा वरदायिनी।
स्तुता मया वेदमाता, ब्रह्म वर्चस दायिनी॥ 16

ॐ भूर्भुवः स्वः ...,

❋ ❋ ❋

मुक्ता विद्रुम् हेम नील धवल, छायै-र्मूखै :- त्रीक्षणैः
युक्ताम् इन्दु निबद्ध रत्न मुकटां, तत्त्वात्म वर्णात्मिकाम्
गायत्रीं वरदा भया ङ्कुश करां शूलं कपालं गुणं
शंखं चक्रम् अथार बिन्दु युगलं हस्तै-र्वहन्तीं भजे॥1॥

आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रि छन्दसां मात-र्ब्रह्म योने नमोस्तुते॥2॥

त्रिपुर सुन्दरी

(त्रिपुरा - त्रिपोर सोन्दरी)

ब्रह्मेन्द्र रूद्रहरिचन्द्र सहस्त्र रश्मि।
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै॥
वागीश्वरी! त्रिभुवनेश्वरी! विश्वमातः।
अन्तर्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते॥

चऽक्रेश्वर चऽक्रेश्वरी छु त्रिपुरायि हुन्द एकाकार।
नाग रूॅफ **श्री कुण्डलिनी!** च़्यथ थवतम बरकरार॥
इड़ा पिंगला राऽछ्य करतम दितम श्वद्ध वेचा़र।
क्रिया मधुमती .चुॅ पानुॅ, शोडशी **नव च़ऽक्र** आकार॥ 1

सृष्टि स्थिति तुॅ - सम्हार छि चाऽन्य शाश्वत क्रम।
चानि वोपासनायि मंज़ **'शब्द'** छु सनातन संयम॥
काम - क्रूद - लूब - मुह .चु-पंज़ुॅर्य कलिकालुॅक भ्रम।
यूग अभ्यास करुॅनुॅ सूत्य मेलान **श्री विद्यायि** हुॅन्द नियम॥ 2

च़ऽखरन हुन्द च़ऽखुॅरॅ **श्री च़ऽक्र** छु चोन नाव।
त्रिकूटी दिवताहन ति लगान अऽति आव तुॅ जाव॥
मनुष्य दीह मीलिथ चऽकरुॅ ग्यान म्योन सऽन्ज़राव।
प्राण अपानस मंज़ **'च़्यथ छु आत्मा'** ई वोॅन्य ह्यछनाव॥ 3

आनन्द स्वरूप छख, च़्यथ विमर्श रूप छख पानय।
अज़पाज़प छख, पानुॅ **अन्नमय** कोश छख जानि जानानय॥
प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय सऽमिथ छख समानय।
प्रपंच़ रूॅफस मंज़ सऽज़िथ पूर्णा मंत्र छु चोन प्रमाणय॥ 4

च़ऽक्रीश्वर छुनुॅ नेबर, यि छु पननुई सहस्त्र आर।
ख्यनुॅ मात्रुॅच शक्ती छि बनावान निराकारस ति साकार॥
मातृकायन अर्थ दिथ, अग्यानस छख करान सम्हार।
श्री विद्यायि रूॅफस मंज़ पे॑ठ छख बिहिथ मूलाधार॥ 5

सौंदर्य लहरी तुॅ पञ्चस्तवी मंज़ छु गुफिथ चोन मंत्र सार।
वसुकोण - दशार युग्म छु च़ऽमिथ मंज़ त्रिवलय आकार॥
मन्वश्र - छु ग्राय मारान बऽनिथ शब्द शरीरुक सार।
नागदल छु नाऽगिन्यन नच़नावान, बऽनिथ ताजदार॥ 6

मूलत्रिकून बिन्दु सहित करान कालस ति सम्हार।
'लज्जा' शब्द 'ह्रीं' छु सगवान बऽनिथ मूलाधार॥
साज़ चोन वज़ान सेतार मनसुॅय बऽनिथ **युग्म दशार**।
ललिता .चुॅ पानुॅ त्रिपोर सुन्दरी करान कालस ति सम्हार॥ 7

च़ऽक्रीश्वरस मंज़ छि अष्टसिद्धि गथ करान बऽनिथ **अष्टदल**।
पोडशदल रास गिन्दान वो॑लसिथ च़टान अग्यानुक मल॥
बाह्य - मध्य - रेखायि छि अन्तर यूगस बनावान न्यरमल।
सृष्टि क्रम संहार क्रम छु चानि दर्शनुक फो॑लवुन कमल॥ 8

खसवुन तुॅ वसवुन **'मंत्र'** छु ज़ानुन ही त्रिपोर - सोंदरी।
लोलवुन तुॅ फोलवुन **'यंत्र'** छु साधनायि हुंज़ च़ऽक्रीश्वरी॥
असवुन तुॅ नच़वुन तंत्र छु कामकला **तंत्रुॅच** काऽमीश्वरी।
लसवुन तुॅ पोशवुन त्रिपुरा रहस्य छु पूर्णा परमीश्वरी॥ 9

ज़िठ्यव वोनमुत छु शास्त्र यथ वनान **सृष्टि क्रम**।
यूग सादुन छु पानय च़्यथस मंज बासि **संहार क्रम**॥
त्रिपुरायि बऽसिथ शरणागती समाप्त करान साऽरी भ्रम।
खारून तुं वालुन शाह छु पानय, करुन छु यिहोय श्रम॥ 10

चोन च़ऽक्र **श्रीच़क्र** छु नुॅ न्येबर छि पर्नुॅनिय नव द्वार।
चानि पूजायि सूॅत्य छि गछ़ान अविद्यायि ति सम्हार॥
शब्द शक्ती छि त्रिनाऽडियन करान पानुॅ संचार।
सृष्टि सम्हार ईकुन पानय छु त्रिपुरायि हुन्द आदार॥ 11

चान्ये यच्छ़ाये **कामकला** यिवान छि वों दयस।
कान्ता चुॅ कल्याणी, त्रिपुरा-भगवती वों लसनस॥
विष्णु माया, विजया, तनुमध्या इवान सोंतय फों लनस।
परा - पश्यन्ती - मध्यमा-वैखरी संघाट करान शब्दस॥ 12

चित्त, चित्ती, चैतन्य शब्द छि चानि पूज़ायि मंज़।
कामेश्वरी बिन्दुतरपन छु अऽमि विद्यायि हुन्द संज़॥
शरीर छु चोन दुयुत अऽस्य, हों खराऽविथ छुनुॅ करुन क्रंज़।
गायत्री - सावित्री - व्याहृती छि चानि वोपासनायि मंज़॥ 13

त्रिपुरा, त्रिपुरेशी, त्रिपुर शक्ति छु चोन नाम स्मरण।
पञ्चादश पीठस प्यें ठ शब्द मातृकायन छख कऽरिथ धारण॥
भवचक्र मध्यमा प्रतिपदा बनेयि सृष्टि हुॅन्द कारण।
'जया' आयि च़ेय निश, करनि चोन यंत्र धारण॥ 14

श्री विद्या

विद्यां परां कतिचिद् अम्बाराम्ब केचित्,
आनन्द मेव कतिचित्कति चित् च मायाम्।
त्वां विश्वमाहुर परे वयमामनाम,
साक्षादपार करुणां गुरुमुर्विमेव॥

प्रणाम चे़ं बऽविनय श्रीविद्या रुपिणी।
ब्रह्माणी, नारायणी छख चुॖ पानुॖ रूद्राऽनी॥
लाकिनी, साकिनी ब्येयि शाकिनी।
वर्धिनी, वामनयनी तुॖ गुम्फिथ त्रिपुरमालिनी॥

प्रणाम चे़ं ...

वास चोन छु, नाव यथ च़ऽक्रीश्वरी।
पुरुष प्रकृति हुॖन्ज छख ईश्वरी॥
तवय नाव प्योय चे़ राज़ राऽजीश्वरी।
मातृकायन कायवुॖनुॖ पानुॖ यूगीश्वरी॥

प्रणाम चे़ं ...

'ऐं' शब्द शरीरुॖचुॖ चूॖय मूलादाऽरी।
बिन्दु - त्रिकून ब्येयि त्रिवलय आकाऽरी॥
ताल बऽनिथ राग ग्यवान दश-आऽरी।
कलनावान कालक्रम बऽनिथ संहाऽरी॥

प्रणाम चे़ं ...

शारिका पीठस प्येंठ चोन आकार।
च़ऽक्रोवथन त्रिभवन बऽनिथ आधार॥

श्रीविद्या परनावतम हावतम बहार।
'श्रीं' शब्द गों णविथ बासान टाकार॥

प्रणाम चे ...

ग्रज़वुँनु म्वखुँ छख बऽनिथ सहस्त्रार।
ज़पनावतम 'ऐं' बीज़ ह्यथ ह्रीम् कार॥
दश विद्यायि मंज़ छख पानुँ ज़ाऽविजार।
'चक्रेश्वरत हाजत रवा' छु चोन तापजार॥

प्रणाम चे ...

आनन्दमयी छख बऽनिथ ताजदार।
कुलार्णव तंत्रस मंज़ चोन मंत्रसार॥
आदि - मध्य - शक्ति कूट छि त्रे द्वार।
त्यें लि न्यरवानस मेलान यूगुक आहार॥

प्रणाम चे ...

वसुकोण छु गिन्दान मंज़ त्रिवृताकार।
ग्राय मारान बऽनिथ 'शब्दुँ' म्वखुतुँ हार॥
नागदलस मंज़ छु चऽकरुँ दलुक प्राकार।
मूल त्रिकून करान अविद्यायि सम्हार॥

प्रणाम चे ...

अणिमा गरिमा छालुँ मारान मंज़ अष्टदलस।
षोडश दल रास गिन्दान षोडशी मंत्रस॥
रेखायि खऽनिथ पूज़नावतम शिलातनस।
'अहम्' शब्द ऐं - ह्रीं अनतम आयतनस॥

प्रणाम चे ...

मंत्र शरीर छु श्री विद्यायि हुन्द अन्तर याग।
यंत्र प्रकरण छु अम्युक बहिर - याग॥

तंत्र छु रंगवुन तुलिमुलि नाग।
आऽखुॅर छु मेलुन यथ वनान प्रयाग॥

प्रणाम चे़ं ...

श्री विद्यायि मंज़ छि कीवल पंदह अछर।
त्रिबाऽगिस संज़ करान अम्युक सें़ज़र॥
कुण्डलिनी ज़ाग्रथस दिवान पानुं पोछर।
गुरु कृपायि मंज़ छु अम्युक बजर॥

प्रणाम चे़ं ...

श्रीविद्या समाप्त करान साऽरी भ्रम।
अऽदुॅरे अन्दर छु अम्युक काल क्रम॥
शब्द मिलवन छि श्रद्धायि सान श्रम।
श्रीविद्या बाला-भवानी छु तारुॅ त्रम॥

प्रणाम चे़ं ...

शैलपुत्री छख ज़गतुक आधार।
मूढ़ प्रकृति पानुॅ बनेयि साकार॥
'कादि' विद्यायि मंज छख पानुॅ न्यराकार।
'हादि' विद्यायि मंज छु चोन व्यवहार॥

प्रणाम चे़ं ...

श्रीविद्यायि मंज़ छ़ारुॅनुॅ नवद्वार।
अनाहत चऽक्रस मंज़ छु चमत्कार॥
शिव-शक्ती मंज़ छु सद्व्यवहार।
'जया' छय 'शब्दस' करान नमस्कार॥

प्रणाम चे़ं ...

देवादिदेव शङ्कर

दीवादिदीव महादीव

कर्पूर गौंर करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा रमन्त हृदयार विन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि॥

बालन छ़ालन छऽ सय छ़ारान **अमरनाथ** क्यन गोंफन।
शिव शंकर सत्य आकारुँ पूज़ करयो च़रनन॥
जटायन मंज़ छय गंगा वसान, हऽटिस वासुक शूबान।
'सोऽहमुँच' तार पानुँ वज़ान, पानुँ श्रीराम नाव स्वरान॥
अथस मंज़ त्रिशूल, कमण्डल, डाबुँरँ .चुँ वायान।
शिव शंकर **सत्य आकार**, च़ेंय मंज़ बुँय कायान॥ 1

बालन छ़ालन ...

शव छस बबा **शिव** बनावतम हावतम पनुन कमाल।
बुजरुँच छम खसान थर थरुँ, बावय पनुन अहवाल॥
जवाऽनी सोरेयम, सोंरुम नुँ शंकर बोज़ता म्योल सवाल।
क्राल बऽनिथ बानुँ थुरथुँय फहल्यव माया ज़ाल॥ 2

बालन छ़ालन ...

रुद्र मंत्रुक गोंड बुँ दिमयो, ॐ नमः **शिवाय** परयो।
बहुरूप गर्भुक पाठ बुँ करयो, शिव कवुँच बुँ हुमयो॥
पारथीश्वरस मंज़ .चुँ छुख पानय, कऽण्ठगन बुँ ज़ालयो।
दतुँरि पोशव वर्शुन बुँ करयो, ब्येलपत्र शेरि लागयो॥ 3

बालन छ़ालन ...

नन्दकीश्वर ध्यान दाऽरिथ, शिव आकार छु प्रावान।
बालस प्यठ छ़ालुँ मारान, **उमायि** सूँत्य .चुँय रोज़ान॥
कुमार गणीश चे॑न सन्तान, **नन्दीगण** पतुँ लारान।
मुह माया माऽरिथ .चुँय, शिव परिवारस लोल बरान॥ 4

बालन छ़ालन ...

भक्ति भावय नाद लायय, मऽशिराऽवज़ेम नुं शङ्करो।
'शिवः केवलोऽहम्' निर्वाण शब्द, म्यानि सुरेश्वरो॥
ध्याऽनिश्वरुँ छुख खऽटिथ पानय, हा म्यानि महीश्वरो।
हर हर पऽरि पऽरि थर थरुँ कासतम, म्यानि हरीश्वरो॥ 5

बालन छ़ालन ...

तार दितमा खार ना कऽरिज़ेम नुं, सत्य आकार शङ्करो।
ही दीवो, महादीवो, कष्ट कोताह लों॑गुय परमीश्वरो॥
ज़ाहर पानय पानुँ चोथो, हटि नील प्येयो शङ्करो।
ऊँकार रूफी नीलकण्ठो, आशुतोष पानुँ शङ्करो॥ 6

बालन छ़ालन ...

नाव ल्यूखमय हृदयस मंज़, लय तथ सूँत्य करनावतम।
श्वद् व्यवहार, शोद् व्यच़ार, सत्य आकार वुछनावतम॥
विभु विश्वनाथ छुख पानुँ, निर्वाण अष्टकम परनावतम।
ऊँ कारुक शिव-शब्द **अजर-अमर ओ३म** स्वरनावतम॥ 7

बालन छ़ालन ...

गऽर्य गऽर्य अथुँ रो॑ट कऽरिथ, मतुँ फऽसरावतम ज़ालस।
लोह लंगरस मंज़ फाऽसिथ, मतुँ लागतम दावस॥

हर हर महादीव, रूद्र रूप चोन ग्रास करान कलि कालस।
मुण्डमाला लाऽगिथ, बूतप्रीत, चानि वेवाह आयि सालस॥ 8

बालन छ़ालन ...

युग बलय '**माहेश्वर सूत्र**' सपद्यव शब्द क्रियावान।
शिव सूत्र चानि **प्रत्यभिज्ञा** शास्त्रुॅक छि थऽदि प्रमाण॥
अभिनव गुप्त शिव रूॅफ चोन, करान **व्याप्त चराचरुक** ध्यान।
परा प्रावेशिकायि मंज़ शयुॅत्रुॅह तत्वन हुन्द दितम ग्यान॥ 9

बालन छ़ालन ...

शिव-शक्ती ब्योन ना केंह, कति छु द्वैतवाद।
शैव दर्शन त्रिकशास्त्र छु शिव अद्वैतवाद॥
च्यथ छु आत्मा, उद्यम छु भैरव, छु यि न्यर विवाद।
स्वच्छन्द भैरव तंत्रस मंज़ छु चोन थोद समवाद॥ 10

बालन छ़ालन ...

स्पन्द शास्त्रुॅच पऽरिज़ानि मंज़ '**स्पन्द**' में परनावतम।
अमृतीश्वर पूज़ायि मंज सन्निमान में रोज़तम॥
करतम दया पाऽन्य पानय, बीज मंत्र में ह्यछनावतम।
जया छय दास चाऽनी, च़्यथ विमर्श में बावतम॥ 11

बालन छ़ालन ...

नऽन्दिराज़ुँ नन्दकीश्वर

(नन्दकेश्वर)

नन्दकीश्वरस छुँय अज़ हा सानि साल।
ख्यावथा खीर खण्ड, त्रावया पोशुँ माल॥
भक्तयन ओसुय द्युतमुत सारनिय आलव।
वाऽत्य लोलसान, साऽरी रऽतनदीप ज़ालव॥
ज़ेठ मावसि दोह लोलुँ पोश पानुँ लागव।
नन्दकीश्वरुन दोह सुम्बलय अऽस्य मनावव॥ 1

नन्दकीश्वर सुँय ...

सुम्बल छि अख जान शीतल जाये।
व्यतस्ता तति पानुँ छि मारान ग्राये॥
बोन्य् शेहजारुँच तति पेंवान छाये।
बऽजि बावनायि सान परान **नन्दि रुद्राये**॥ 2

नन्दकीश्वर सुँय ...

नीलमत पुराणस मंज़ छु चोन वरणन।
भऽक्ति भाव सान करान लोल कीरतन॥
तर्क राज़ुँ पऽर्य पऽर्य पेंवान छि परन।
पर्क राज़ुँ सोंर्य सोंर्य करान नाम स्मरण॥ 3

नन्दकीश्वर सुँय ...

पऽहरुँदार बऽनिथुँय शिव-शक्ति ईकनोवथन।
भवाऽनी सहस्त्रनाम प्रेकाशय बदि कोडथन॥
पूर्णा परा-शक्ति हुन्द करान न्यथ स्मरण।
च़्यथ विमर्श रुपिणी हुन्द कोरूथ मंथन॥ 4

नन्दकीश्वर सुँय ...

चोन अख अख बीज़ मंत्र छु ग्यानुक भण्डार।
.चुँ ना वृषभ वाहन, छुख गनन हुंद सरदार॥

चानि दरशऽनुँ मेलि परमार्थुक पोंज़ सार।
पानुँ पार्वती सूज़नख अऽसि निश अवतार॥ 5

नन्दकीश्वर सुँय ...

चोन बीज़ मंत्र ज़ोन सानि **पद्मान्ये**।
योसुँ आऽस ज़पान ज़फ **'कन्दि रूद्राये'**॥
साख्यातकार सपद्योस गाह वुछिन तथ जाये।
तोंमुलुँ टोक प्यठ टूँक द्युतनस निश व्यतस्ताये॥ 6

नन्दकीश्वर सुँय ...

जुरयाते - पद्मान रोज़न नुँ मोंहताज कुनि जाये।
लोल बरान नन्दकीश्वरस मंज़ कायि काये॥
इष्टदीव योहोय सोन, रछान वावने ग्राये।
अऽस्य अऽमिस ल्वलवान लोलुँसान माये॥ 7

नन्दकीश्वर सुँय ...

नन्दकीश्वर छुख पानुँ करान यूगुक प्रसार।
चोतुर बोंज़ छुख रख्त वर्नुँकि ध्यानुक व्यस्तार॥
त्रिनेथर दाऽरी बनावान विमर्श शक्ती आधार।
बीज़गर्भ मुण्डशील - पार्वती पोंथुर पानुँ साकार॥ 8

नन्दकीश्वर सुँय ...

हा नन्दि राज़ा! हा ताजदारा! महादीवनि पानुँ सरदारा!
आमुँत ह्यनुँ छिय, करान चेय अऽस्य ति ज़ारपारा।
'ज़ीवेत शरदः शतम्' परान, बन्योख साकारा।
ओऽम ह्रीं श्रीं नन्दिरूद्राय नमः छुख शब्दुँ आकारा। 9

नन्दकीश्वर सुँय ...

च्यथ - विमर्श वुज़नावतम मंज म्यानि काये।
पनुन आत्म रूँफ हावतम लोल तय माये॥
सुम्बल तीरथय नाव ज़पुँहाऽय ध्यान दारनाये।
'जया' छय नाद लायान सोन यू यथ जाये॥ 10

नन्दकीश्वर सुँय ...

आदित्य हृदय

नमो धर्मनिधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे।
नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः॥

सिर्य भगवाना! बोज़ु मयाऽनुँ ज़ारुँय।
चाऽनिस सौर मण्डलस करहाऽय नमस्कारुँय॥
नख्यतुँर तुँ नव ग्रिहिद छि अऽमिक प्रमाणुँय।
चोन प्रकाश छु बनावान ज़गतस दीप्तीमानुँय॥ 1

सिर्य भगवाना! ...

चान्ये जुँचय क्याह छि प्रकाश वानुँय।
सारिनुँय रुगन शो॑मरिथ छि थवानुँय॥
युस न्यथ आसि **आदित्य हृदय** परानुँय।
आदि अनादि आदित्य मंत्र स्वरानुँय॥ 2

सिर्य भगवाना! ...

चोन थान छु सोरुयुँ, वनान यथ आकाश।
च्यथ-विमर्श गथ करान बऽनिथ प्रेकाश॥
चान्ये वोदये दूँत्यन गछ़ान पानय नाश।
यलि ब्रह्मरन्ध्रस ज़ोति अऽन्दर्युम प्रागाश॥ 3

सिर्य भगवाना! ...

छुख पानुँ शूबवुनुँ **हिरण्यगमर्भुक** आकार।
पृथ्वी तुँ साऽरी तारख मंडुँज् करान छय नमस्कार॥

आर यियुँ तनय सोनुय गों छ़ नु युन व्येकार।
सारुक सार चुँ पानुँ **गायत्री मंत्रुक** ति सार॥ 4

सिर्य भगवाना! ...

तापने च़ऽन्जि मंज़ लगान **मारतन्ड** तीरथय दरबार।
अऽथ्य नाव प्यव **निमिश, च़्युह दोह तुँय वार**॥
पछन तुँ र्‌यतन, वर्ययन अबदन हुन्द छुख आदार।
यार बलुँ संध्या समयुँ चे़ननाव **ऊँकारुक** आकार॥ 5

सिर्य भगवाना! ...

वार चाऽन्य **आथवार**, त्यथ छय **सतम**।
गायत्री सावित्री, **प्रणव** में चे़ननावतम॥
पनने अनुग्रहे आत्म प्रेकाश में दितम।
लूसमुँचे़ं न न्यथरन स्वप्रकाश में अनतम॥ 6

सिर्य भगवाना! ...

गटुँकासान पानुँ छुख प्रकाशवान।
सतन गुर्यन प्यठ सवारि छुख दीप्तिमान॥
साऽरी न्येशतुँर तु साथ चे़ंय पादन नमान।
बाह राशि वुँहुर्य वर्यस गथ चे़ं करान॥ 7

सिर्य भगवाना! ...

वेग्यान रूफ छुख नाव छुय **भास्कर**।
अनि-गटि नाश करान पानुँ **दिवाकर**॥
स्वाहा स्वधा रूफस पूज़ि लागान **प्रभाकर**।
ऊँ सां सीं सत् सूर्याय नमः छु चोन बीजाक्षर॥ 8

सिर्य भगवाना! . .

एक-नाम सप्तनाम सहस्त्रनाम छि चाऽनी।
आदित्य-हृदय छि पान **श्रीराम** सुँज़ वाऽनी॥
कारन तार दिवान, यम नियम थवान छि ग्यानी।
न्यबरुँ प्रेकाश वुछिथ, गों'णवान छि प्राऽनी॥ 9

सिर्य भगवाना! ...

अदिति हुन्द सन्तान '**आदित्य**' नाव छु चोनुय।
दिवताहन हुन्द राऽछदर इष्टदीव छुख सोनुय॥
परा प्रकृति पूरिथ इवान, ध्यान थव म्योनुय।
सौर मण्डल गाह त्रावान, आलव बोज़ सोनुय॥ 10

सिर्य भगवाना! ...

आशा ऊषा उषमा राश्या यिमछि चाने गाहय।
सप्त किरनन सूँत्य रास गिन्दान, लोल बुँय बावय॥
चाने प्रेभाव पोशनूल बोलान, मनुक सेतार हावय।
छ़्यथरुपिणी शक्ति, ऊर्जा बऽनिथ तन नावय॥ 11

सिर्य भगवाना! ...

सतन अश्वन लोल बोरूथ छुख कश्यप र्‌यशुन सन्तान।
'**जया**' छय न्यथ प्रभातस आदित्य हृदय परान॥ 12

सिर्य भगवाना! ...

❀ ❀ ❀

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोस्तुतेते॥

लल्लेश्वरी

(लल द्यद)

ॐ श्री शिव योगिन्यै नमः

ललि माजि आऽसिन सोन नमस्कार।
यऽमि कोॅर शिवयूगुक पानुॅ प्रसार॥
बाऽदुॅरुॅ प्यथ पुनिम दोह आयि साकार।
वोॅनुन - शिवमय ज़गतुॅय छु **शिव** - आकार॥ 1

ललि माजि ...

ज़्येनुॅ गरि प्यठुॅ ओसुस शिवसुन्द लोल।
शिव शब्दस दितुन तपस्यायि हुन्द ज़ोल॥
शिव शिव परान कोॅरून नाद ब्रह्मस तोल।
ग्वर यऽमिसुन्द ओस तपस्वी स्यद्धुॅ मोल॥ 2

ललि माजि ...

स्येम-पोरकिस पंडितस द्युत क्वदरतन मान।
यऽमिस ज़ायि **यूगीश्वरी** लल ग्यानवान॥
वोननस यि सम्सार छु चऽकि नाशवान।
ज़ीव-ज़गत- व्यछ़नाऽविथ दितनस प्रमाण॥ 3

ललि माजि ...

रोॅन्यन प्येठ लऽगुॅन कोॅरहस लोकचारय।
स्वनुॅ पंडित वरनि आस सु ब्रेह्मन ज़ादय॥
लल परज़ुॅनाऽवुॅन नुॅ ओसुस अग्यानय।
लल माऽज आऽस सादान '**सूहम**' पानय॥ 4

ललि माजि ...

ुमस तुॅ यऽग्न्यस मंज़ बास्योस साकारुॅय।
अऽमिसुन्द शब्द ओस कीवल **ॐ कारुॅय**॥
ीवी छि वनान '**परमशिव**' छु न्यराकारूॅय।
षट् च़ऽक्र बीदन छु यूगुक च़्यथमय आदारुॅय॥ 5

ललि माजि ...

ललि माजि दिल लौग नुॅ गृहस्थ किस जंजालस।
आत्मदीव परज़ुॅनोवुन च़्यथ खारनस तुॅ वालनस॥
आरोहन अवरोहन ज़ोतनोवुन मंज़ ब्रह्माण्डस।
च़ऽन्द्रायुन चोपुन बो'रुन नुॅ केंह ति दहानस॥ 6

ललि माजि ...

हशि माजि कऽरुॅनस स्येठाह छ़ल तय वल।
'नलवठ' बतुॅ कऽनि, हशि तानिरुक ओसुस मल॥
ललि फो'लराऽव **सहस्त्रारस** पानुॅ पम्पोशु दल।
ब्रह्मसरस मंज़ आसान इथुॅ पाऽठ्य ख्यल॥ 7

ललि माजि ...

माऽज लल आऽस नेरान न्यथ लोलरे।
चे़नुन '**शिव**' छु सदा पनने गरे॥
संविथ् स्वरूप छु फो'लिथ लंज़ि थरे।
लोलुॅ ऩचुन आऽस करान पनने मरे॥ 8

ललि माजि ...

च़्यथ विमर्श वुछुन **स्वच्छन्द** भवनस।
त्रिनाऽडी ज़ोतेयस प्रथ यूगुॅ ख्यनस॥
प्रान अपान व्यान समान कों'रून पवनस।
च़ऽन्द्रकलायि मंज़ शों'ज़रोवुन स्वमन मनस॥ 9

ललि माजि ...

प्रत्यभिज्ञा वखनाऽविथ वोंनुन **कीवलोहम्**।
त्रिकारणस इकवाठ कऽरिथ ज़ऽपुन शब्द ब्रह्म॥
शोंमरोवुन पान शऽमिथ यम ति नियम।
आमि टाकि दीह च़ोंमरिथ प्रखट्यव **सूहम**॥ 10

ललि माजि ...

आयेयख वाऽनिस गऽयख कान्दरस।
दिगम्बर बऽनिथ च़ायख तन्दूरस॥
सीता माता बऽनिथ आयख कलिकालस।
वीद-वीदान्त मोंन्दुथ मंज़ प्रथ **वाखस**॥ 11

ललि माजि ...

न प्यायख न ज़ायख न ख्येयथ हन्द।
न्यरमल आयख न्यरमल रूज़ुॅख अन्दवन्द।
काम-क्रूद गाऽलिथ शिव-शक्ति कोंरूथ पयवन्द।
शिव छु थलि थलि वुछान, अऽमिच दि.चुॅथ सन्द॥ 12

ललि माजि ...

चानि प्रेभावुॅ वाख चोन में सोंदुय।
यि में प्रोवुय ती में बोवुय॥
अग्न क्वण्डस मंज़ पान में नोवुय
जयन ब्रह्मतीज़ चें मंज़ कोयुय॥ 13

ललि माजि ...

पण्डित कृष्ण कार

ाय जय च़ें आऽसिनय कृष्ण कार।
ुख माजि शारिकायि हुन्द टोठ यार॥
ोरि हो लागय च़ें सेन्दरि दस्तार।
न्दे **शिलातन ईश्वरी** हुन्द छुख ग्रन्थकार॥1

जय जय च़ें ...

ााव पोश चा़ऽर्य चा़ऽर्य कऽरमय त्वता।
ाऽनि त्वता छय शारिकायि हुँजं संहिता॥
कृष्ण छुख पानुॅ व्यछ़नाऽवतन श्री गीता।
जन्गो रा सर्व सामान तुहि'-छुख कर्ता॥ 2

जय जय च़ें ...

जाय चाऽन्य् छि म्यानि मनुक व्यस्तार।
लों'ल ललनोऽवथन दीवी हुन्द साख्यातकार॥
शब्दस-अर्थ वखनय छु चोन गुफ़तार।
ज़ि **शारिका छि महालक्ष्मी** पानुॅ न्यराकार॥3

जय जय च़ें ...

शैव-शाक्त मिलनोवुथ पनने कलमय।
कलमकार बऽनिथ तराऽशिथ **दीवी शिलामय**॥
शाम-सों'न्दरी शारिका छि भव च़ऽखरुॅ मय।
दीवी सतीसर आयुॅ बऽनिथ पानुॅ ज़लमय॥ 4

जय जय च़ें ...

वन्दे शिलातनस मंज़ छु शब्दुॅ-सार।
श्रीविद्या मंत्रस दितुथ अर्थुक व्यस्तार॥
चाऽन्य् स्तुति छि **पंचदशी** हुन्द आकार।
पादन चान्यन अरपन करय पोशुॅ अम्बार॥ 5

जय जय च़ें ...

ब्रह्मतीज़ थों'वुथ दस्तारूक बरकरार।
तरन्गस मंज़ छि शक्ति साधना साकार॥

दशमहाविद्या ज़फ छु सानि क्रऽच़ हुन्द आदार।
सप्तमाऽतृकायत कोंर त्रभवनस वोंपकार॥ 6

जय जय चे़ं ...

हार जून पछ सतम त्रोवनय शारिकायि व्यूग।
बाऽगरोवुन माऽतृकायन नून च़ोंचुँ तुँ प्रूग॥
राऽग्न्या - ज़ाला - कालिकायि समाप्त कऽरि रूग।
नूरे जहान सुन्दरी शोंमराऽवि कर्म बूग॥ 7

जय जय चे़ं ...

हुर्य आऽठम लगान शारिकायि हुन्द दरबार।
आं शां फ्रां शारिकायि हुन्द वज़ान सेतार॥
च़ऽक्रीश्वरस गाह त्रावान **बिन्दु तुँ युग्म दशार**।
अष्ट सिद्धि ज़ुं.चुँ त्रावान बऽनिथ त्रि-वृताकार॥ 8

जय जय चे़ं ...

चक्रेश्वरत हाजत रवा साजो गदा रा पादशा।
शब्द सूँत्य शक्तिपात कोंरूथ **वाह वाह थापना**॥
शारिका छि परा शक्ती, पूर्ण करान पानुँ कामना।
राज़ बावथ कऽरिथ पानय, मीज अऽस्य थऽज़ुँ प्रेरणा॥ 9

जय जय चे़ं ...

सीनुँ ब सीनुँ छि शारिकायि हुँन्ज़ क्रथ।
हार जून पछ **नवम** छि दीक्षा रटनुँच त्यथ॥
शारिका सहस्त्रनाम छुँ पानुँ हमसुँ गथ।
यूग क्रम बाऽविथ, ग्यान गंगायि हुँज़ सथ॥ 10

जय जय चे़ं ..

चोन ब्रह्मतीज़ दिवान ब्रह्मसरस पानुँ तार।
श्रीविद्या बावनुँ खाऽतरुँ छुख **कृष्ण कार**॥
हंस गवा सोऽहं परून, छु ग्यानुँ युगुक आदार।
'जया' छय वच़नव सान क़रान ज़ार पार॥ 11

जय जय चे़ं ...

पीर पण्डित पातशाह

ुस ओस र्‌यशपीर, कर प्यव थनय, कुस सनाह ओस र्‌यथ।
ोर सास सथ हथ तुॅ त्रुवाह ओस सप्तर्षि श्वो'भ समवथ॥
ीन व्यगलिथ, शिशुर च़ऽलिथ साऽखी छय व्यतस्ता व्यथ।
ानुॅ थनुॅ पे'व व्यस्ता पो'थुर, आव सो'तुन सबज़ार ह्‌यथ। 1
ाटुॅ पछ **पाऽञ्चम;** जिष्ठा नेशतुर ओस **वयखुन र्‌यथ।**
बरलबे सोपोर नावि मंज़ गव **पीर पण्डित** ज़्यथ॥
ब्रह्म तीज़स ग्रख लऽज; ग्यान प्रेकाशन हाऽव वथ।
भवाऽनी सहस्त्रनाम, बहुरूप गर्भुक पाठ को'रूख न्यथ॥ 2
मात्ययि बो'रुनस द्वदगऽलि चावान **शारिकायि** हुन्द लोल।
गून्द जू खो'श कर्मवान ओस अऽमिस तपीश्वर सुन्द मोल॥
आं शां शारिका ग्रज़ेयि वज़ेयि तम्बूर, तुॅम्बखनारि तुॅ डोल।
चान्ये ज़्येनय छो'कलद ज़खमन ब्यूठ तपस्यायि हुन्द क्रोल॥ 3
यूग अऽग्नस मंज़ कुमलोवुन पान चो'दहन वर्ययन श्यन र्‌यतन।
प्रकरम दिथ को'ठ्‌य गाऽलिथ, अऽन्दि अऽन्दि **परबतक्यन शिलायन॥**
च़ऽक्रीश्वर मंज नब ग्रन्य द्राव सूर को'रून दानवन।
साख्यातकार सपद्‌यव पीर पंडितस, ईकुत गव त्रन भवनन॥ 4
कृष्ण कारन कृपा कऽरिथ, चे'यन पीर पंडितन चिलमा सातस।
क्याह सनाह राज़ ओस, त्येलि ऋषि पीर ओस द्रामुत प्रकरमस॥
पयवन्द प्वखतुॅ को'रनस, साधनायि हुन्दिस कुलिस खामस।
फो'लिथ शाक्त यूग सोदुन, दिशा मीजिस यूग - अभ्यासस॥ 5
नार लो'ग शहरे - खासस, वो'थ स्यठाह हाहाकार।
ख्रावि खो'र दितुन बऽरिथ, नारस बन्यव गुलज़ार॥
मूर्तिमान वरूण दिवताह आव बऽनिथ आबशार।
अऽमि पतुॅ पीर पंडितन हाऽव स्यठाह चमत्कार॥ 6

वृद्ध माजि सपद्येयस गंगबल करनुंच प्रबल यच्छ़ा।
पीर पंडितन वोननस – '**माता! यूरय अननय बुं गंगा**'॥
दि पनुंन लूर युर्य, बटयारुं करख च़ त्रि संध्या।
यि बोवनस ती प्रखटोवनस, कारण यच्छ़ा ज्ञान तुं क्रिया॥ 7
बटयार यारबल बऽन्यव शक्ती हुन्द तीरथ पानय।
भऽक्तयुव रंग रंगनाऽवि यूगुंक पाऽरिख जामय॥
शाह खोरूख तुं वोलुख, बनेयि जाने जानानय।
'**प्रज्ञानं ब्रह्म छु**' — क्याह ओस सु मस्तानय॥ 8
शारिकायि हुन्दि ध्यानय, वो'पवाऽसिन द्यन तय राथ।
अष्ट सिद्धि नमेयस — 'बब! हुकुम कऽरिव प्रखटावव करामाथ'॥
ब्रह्मतीज़स ग्रख लऽजुं कुंटुं पीरन लऽजुं बरमन्दन्यन माथ।
तसुन्दि प्रेभाव बास्यव नि, माऽज्य कऽशीर छि अनाथ॥ 9
कथ करनस ओस नुं वार समय ओस क्रूठ तुं दुशवार।
असरव आऽस गीरमुंच बुतराथ, बऽखुंतुं कऽरिख खार॥
पानुं **पातशाह पण्डित** च़्यून, ब्यूठ सुंहस पानुं सवार।
हरदु-जहान-मुशकिल कुशा आसान, बऽनिथ बन्यव सरदार॥ 10
बटुंयार आऽलिकदलुं पीर साऽबुन छुय नो'न दरबार।
असुंन्दि न्यरवान श्रादय, नियाज़न खसान अम्बार॥
पादुका चाऽन्य इसबन्द कुलचुवोर लाऽगिथ करान चमत्कार।
तति **शारिका** '**हुम**' हवनस नच़ान न्यथ बारम्बार॥
'**जया**' छय दास चाऽनी, चानि शेहजारूच तलबगार।
चानि पादुकायि प्यठ यछ़ पछ़ छम छस ताबेदार॥
माऽज्य् कऽशीर छि च़क्रीश्वरूक शोलवुन दरबार।
तुल अथस मंज़ अलम ब्येयि, छुख पानुं अलमदार॥
पीर पण्डित पातंशाहस बऽवितन जय जयकार।
यऽमिस ग्वर ओस पानुं पण्डित कृष्ण कार॥

'अलख लीला'

'चित् - विमर्श' रूपायै नमो नमः

यऽलि धर्म छ़वक्यव यथ कश्मीर मण्डलसुँय।
ललि' पतुँ 'अलखीश्वरी' 'आयि पानुँ ज़न्मसुँय'॥
क्याह सानाह न्यशतुँर ओस तथुँ श्वभ क्षणसुँय।
माजि र्‌वपि ह्योत ज़न्म दर भारद्वाज़ क्वलसुँय॥
बब माधव आव स्यठ्‌ाह व्वलसनसुँय।
'अलखीश्वरी' प्ययि यऽल्य थनुँ तथ घरसुँय॥ 1

यऽलि यऽलि ....

माधव दरन ग्वर मंत्र ल्यूँखनस ललाट्सुँय।
त्रिकूटी दिवताहव गथ कऽरुँख तथ बीज मंत्रसुयँ॥
ओं ह्रीं श्रीं हुं मंत्र प्वरुख तथकालसुँय।
फ्रां आं शां शारिका आयि पानुँ सालसुँय॥ 2

यऽलि यऽलि ....

र्‌वन्यन प्यठुँय खाँदर क्वरूहय ल्वकचारसुँय।
हीरानन्द तुँ सपुँर टोलुँ आव तों'त सालसुँय॥
कमिस पताह ओस क्याह बनुँ चाऽनिस ललाटसुँय।
दीवी मा छुँ पानुँ वऽ.चुँ मुँच़ इथिस कमालसुँय॥ 3

यऽलि यऽलि ...

बब माधवन दिच़ नय हय च़्येय दीक्षा।
क्रूठ वऽरिव्यव करुँहय स्यठा परीक्षा॥
यमि् लोह-लंगरुँच थविथ नु काँह कांक्षा।
'निर्वाण' शुब्दुँच कऽरिथ पऽज़्‌ व्याख्या॥ 4

यऽलि यऽलि ...

क्याह सनाह ओसुयुँ पताह क्या छुँय लान्ये।
खिर दीचुँ यलि वोतुय प्यठ च़्येय मालिन्ये॥
केंह नय फिक्री ख्वतुई चानि हशि माज्ये।
माल्यन्यन युथ-त्युथ व्वननय, सूज़नख ग्राये॥ 5

यऽलि यऽलि ...

फिर फिर ति खाऽली गवनय सु खीर बानुँय।
प्रेभाव चानि सूँत्य '**अन्नपूर्णा**' च़ायि तथ मंज पानुँय॥
'ज्ञान प्रकाश' तुँ यूग प्रखटव, तऽत्य, स्व मनुँ ध्यानुँय।
इक्याह राज़ ओस, बुँ नय माऽज़ि केंह तुँ ज़ानुँय॥ 6

यऽलि यऽलि ...

यूग धारनायि किनुँ शेरस आऽसिख सवार।
भर्था रूज़ुय ज़ाग्ये मंज़ **शारिकायि** हुँदिस दरबार॥
अन्धकार प्योस, समजुन नुँ शारिका छि साक्षात्कार।
वाऽरिव्यव तंग अऽनिह्यख, वोँथ स्यठाह हाहाकार॥ 7

यऽलि यऽलि ...

फीरुँख साढ़न बाहन बाहन वर्ययन यूग सादन्ये।
'**शिव**' छ़ोण्डथन च़्येय रुमुँ रुमुँ तुँ प्रथ काये॥
वासकुरुय वास क्वरुथ तथ शीतल जाये।
युस बन्यव स्यद् पीठ तथ तीर्थ जाये॥ 8

यऽलि यऽलि ...

कऽारेथ कृपा न्यतरुँहीन बालकस, प्रखटोवुथ पज़र।
यूत यूत क्रूर तऽम्य खोँन, नज़रि गोस त्यूत स्यज़र॥
ध्यान दारनायि मंज़, कोताह छुँ चाऽनिस श्वज़र।

चाऽन्य् अख अख वाऽणी छि, निर्वाणुक बजर॥ 9

यऽलि यऽलि ...

व्वतशन ज़ोतनोवथन ततुँथिय सूँत्य मनिगामस।
तति चन्द्रायुन चोपुथ प्रथ सातस तुँ मासस॥
अन्न व्वपद्यव तति प्रथ बेरि तुँ खाहस।
ध्यान दारनोवथन '**लालचन्द**' मंज़ प्रथ पान-अपानस॥ 10

यऽलि यऽलि ...

आं शां शारिकायि हुँन्जुँ जुँ.चुँ प्ययि ज़गतस।
न्यरवानुक ज्ञान-प्रकाश म्यूल प्रथ भक्तस॥
माऽज्य् **शारिका** बिहिथ छख पानुँ तख्तस।
गम दूर करी, कलि-कालकिस वखतस॥ 11

यऽलि यऽलि ...

ध्यान - धारना तुँ यूग छख .चुँ सादाऽनी।
अमि खाऽतरुँ दीवी दिवताह छुँ क्रेशाऽनी॥
त्रय अछर '**अलख**' क्याह छि शूबाऽनी
ब्रह्मा-व्यषण तुँ महीश्वर छि पानुँ लूबाऽनी॥ 12

यऽलि यऽलि ...

ह्यरि ब्वनुँ 'च़्यथ' क्वडुथ बदि मंज़ ब्रह्मरंध्रस।
मूलाधारुँ प्यठुँ छ़ालुँ मऽरिथ सहस्त्र - आरस॥
ज्ञान ज्यूतुँ प्ययि तमिस ल्वकटिस **बालदरस**।
वैखुरी हुन्दुँ ज्ञान म्यूलुस, '**अलख शब्द**' परनस॥ 13

यऽलि यऽलि ..

दीवी आंगनै च़्येय द्वयुत त्रोवुथ।
शिव माधव तु लल व्यवनोवुथ॥

च़्यथ विर्मश सूॅत्य निर्वाण प्रोवुथ।
यी च़्ये प्रोवुथ ती हय माऽज्य् च़्ये बोवुथ॥ 14

यऽलि यऽलि ...

मंज़ लारुॅय, लार कऽरुॅथ च़्येय दानवन।
न्यथ बूजुॅथ शारिकायि हुन्ज़ुॅ कनवन॥
अन्तर-दृष्टि सूॅतुॅ ईकोवुथ त्रभवन।
क्रख है लायै, च़्येय बुॅ स्वमन॥ 15

यऽलि यऽलि ...

ऊँकार रूपी छखुॅय .चुॅय राज़ राऽज़ीश्वरी।
साकार रूपी छखुॅय .चुॅय पानुॅ **अलखीश्वरी**॥
निराकार रूपी छुखुॅय .चुॅय श्री **भुवनीश्वरी**।
इकार रूपी छखुॅय .चुॅय महा **यूगीश्वरी**॥ 16

यऽलि यऽलि ...

अलखलीला छख पानुॅ प्रज़लान।
भक्त लोल भाव ध्यान च्योन दारान॥
चऽशमै साहिबी छै शोलुॅ मारान।
सारिनुॅय द्रखन तुॅ दाद्यन .चुॅय कासान॥ 17

यऽलि यऽलि ...

किथुॅ कनि हय ह्यमय नावुॅय बुयुॅ चोनुॅयु।
रुपा भवानी नाव सान इतुॅ सोनुॅय॥
कऽत्य् छख आसान माऽज्य् यि म्योनुॅय।
व्वतशन तुॅ वासु कुरि प्यठु यि सोनुॅय॥ 18

यऽलि यऽलि ...

'**अ**' शब्द छख .चुॅय ऊँकाऽरी
'**ल**' शब्द छख सुॅहस सवाऽरी॥
'**ख**' शब्द यूग निद्रायि हुँज़ खुमाऽरी।
अलखीश्वरी छख चुं करुॅवुनुं याऽरी॥ 19

यऽलि यऽलि ...

यूगॅच .चुॅय माल फिरनावथम प्रथ हालय़।
दीपमाला आलवय न्यथ प्रथ कालय॥
बीजमंत्र-अलख स्वरय बुॅय मनि मालय।
श्री शां शारिका परय यियुॅ सोन सालय॥ 20

यऽलि यऽलि ...

दूरि प्यठन छयऽ '**जया**' नाद च़्ये लायान।
इन्द्रिय श्वमराऽविथ यूग बुॅयुॅ कायान॥
निर्वाण शब्दुक दितम च़्युॅ आख्यान।
आत्मबल दितम मेल्यम युथ न्यरवान॥ 21

यऽलि यऽलि ...

शारिकांश समुत्पन्ना अलख मंत्र प्रवर्तिका।
सर्वशास्त्र स्वरूपा या, रूपाभवानीति विश्रुता॥
अन्तर्दृष्टि विलासेन लब्धा निर्वाणपदं यया।
अलखेश्वरी जगद्वंद्या, नम्या सा माधवात्मजा॥

'ज्ञान गंगा'

बब भगवाना

ओ३म नमो भगवते गोपीनाथाय
संवित् स्व रूपाय नमो नमः

बब भगवाना छमहा मनि-कामन।
दामन रटहाऽ सुबहन तुँ शामन॥
हारिमालि थनुँ प्योख .चुँ हा लालय।
नारान जुवन बऽरिनय लोल प्यालय॥
ज्ञानगंगा ह्यथ इतमो वोंन्य सालय।
'सोऽहम्' शब्दुँक .छुँनया चे़ं मालय॥ 1

बब भगवाना ...

'गकार' रूँपी छ्युक न्यराकारुँय।
'ऊकार' रूँपी सृष्टि हुन्द आदारुँय॥
'पकार' रूँपी पानुँ पालनहारुँय।
'ईकार' रूँपी दिवान भवसरस तारुँय॥ 2

बब भगवाना ...

सत् र्‌योष .चुँ छुख, बबा तपुँ र्‌योंश .चुँ छुख।
र्‌यशन हुन्द र्‌योश पानुँ भगवान छुख॥
कलिकालुक चुँ पानुँ ताजदार छुख।
म्यानि द्‌यकि लान्युक चुँ 'कलमकार' छुख॥

बब भगवाना ...

ज्ञान गंगा ग्रज्ये़यि यलि प्वखरिबलय।
'गूपियन' सूँत्य यूग सोदुथ व्यथबलय॥

ब्रह्मतीज़ चोन प्रज़ल्यव मानसबलय।
नन्दकीश्वरन साल क्वरनय सुमबलय॥

बब भगवाना ...

ह्रीं-श्रीं-क्लीं ज़ुं.चुं प्ययि त्रभवनसुंय,
इडा-पिंगला-सुषम्ना ज़ोतेयि क्वण्डसुंय,
परा शक्ति प्रखटेयि मंज़ भवसरसुंय।
नवधा-भक्ति आयि व्वन व्वलसनसुंय। 5

बब भगवाना ...

काम - क्रूद - लूभुंक चऽटिम कण्डुंय ज़ालुंय।
ज़ऽपुंम यलि **श्रीमन् भगवन् गोपीनाथ** मालुंय॥
ह्यछनाऽवथस यूगसेतारुंच राग तुं तालुंय।
बबा ज़ानान छुख म्योन हाले - अहवालुंय॥ 6

बब भगवाना ...

वीद वीदान्त कऽडिथ पानय छान्ये।
शयत्रुंह त्वथ व्यकसेयि प्रथ कायि काये॥
आत्मदीव परज़ुंनोवुम मंज़ ज्ञान गंगाये।
प्रखट्योम पज़र मंज़ चानि दारनाये॥ 7

बब भगवाना ...

भक्ति भाव सान पूज़ा छऽ सय करान।
त्रन मात्रायन हुन्द ध्यान बुं स्वरान॥
विज़ि विज़ि गऽर्य गऽर्य लोलुं बरान।
बब त्रिसंध्यायि मंज़ ज्ञान गंगा अनान॥ 8

बब भगवाना ...

'**प्रकाश**' रूपी छुख पानुँ भगवानुँय।
'**विमर्श**' रूपी छुख हा शक्तिवानुय॥
'**नाद-ब्रह्म**' स्वरुपुँय दीप्तिमानुँय।
ज़ीवन म्वक्त वुछुमख .चुँय **मूर्तिमानॅय**। 9

बब भगवाना ...

'**हुम**' शब्द आवाहन क्वरुथ '**हिरण्यगर्भस**'।
शारिकायि रास ग्युन्द मंज़ चऽकरीश्वरस॥
राऽगिन्यायि 'रंग' बदलाऽव्य् तुलिमुलि नागस।
ज्वालायि जूल ज़ोतनोव प्यठ शिलायि ख्रिवस॥ 10

बब भगवाना ...

शाऽरिदुँ ऊँकारन गाह त्रावि ज़गतऽस।
नवदुर्गा ह्यथ बबा ब्यूठ् तखतऽस॥
वटकराज़न मशवर कोॅर सुॅत्य बबऽस।
ज्ञान गंगा व्यकसेयि मंज़ 'ब्रह्मरन्ध्रऽस'

बब भगवाना ...

ज्ञान गंगा प्राऽविथ चेॅयि कुन लारान॥
'अहम्' फुटरिथ चेॅयि मंज़ कायान॥
स्वप्न ज़ाग्रथस मंज़ साज़ुँसेतार वायान।
स्यकि शाठव प्यठुँय '**जया**' नाद लायान॥

बब भगवाना ...

❋ ❋ ❋

ईश्वर स्वरूप स्वामी लक्ष्मण जू

ज्योति - स्वरूपाय - लक्ष्मणाय नमः

ईश्वर स्वरूपा! भगवन् रूपा! चानि साधनायि छुय नमस्कार।
अकार रूपा! इकार रूपा! संवित् स्वरूपा! छुखना पानुँ अवतार॥
लक्ष्मण साकारा! स्वाऽमी राम आकारा! छुख पानुँ न्यरविकार।
नारान जुवनि सन्ताना! **माहताब** काकनि फरज़ाना! छुख शिव आकार॥

साधनायि हुँन्ज़ि कऽहवचि प्यठ द्राव ब्रह्मतीजॅक श्वज़र।
ध्यान दारनायि मंज़ छु **संवित्** शब्दस स्यठाह थज़र॥
आशि मंज़ आश आशराऽविथ बोवुथ परम ग्यानुक पज़र।
रो'न्य दामानस श्रो'न्य गव तत्य, यऽलि त्राऽवुँथ पनुँन नज़र॥

'अमृतेश्वर' बीज़ मंत्रु सूँत्य होवुथ मनुक सु आकाश।
पानुँ 'सदाशिवन' लोल न्येथुँरव द्युतनय पनुन प्रेकाश॥
कश्यप र्‌यश सुँन्द अऽमि सन्तातन दिच् पोशवुँनुँ आश।
ईश्वर स्वरूप पानुँ र्‌योश बऽनिथ आव गऽटे मंज़ गाश॥

मंत्र प्रोवुथ **'त्रिक'** व्यछ़नोवुथ ललनोवुथ सु ज़ित्यन्दर।
अनाहत शब्द सूँत्य षठचऽक्रदलुक होवुथ ब्रह्मरन्ध्र॥
मूलादारस मंज़ **चित्त चित्ती** चेननोवुथ ब्ययि मन मन्दर।
तपवुँनि ग्रेकि मंज़ शिशरुँनि छटि मंज़ छु **शिव** सो'न्दर॥

यूग बलुँ परज़ुनोवुथ नखि डखि छि **शक्ति तत्व** आसान।
शैलपुत्री शिलायि प्यठ, इच्छा शक्ति सान वो'लसान॥
वो'थ बा ज़ीवो 'शिव' रटुन न्यथुँर छि तस ति लोसान।
परम शिव परमेश्वर विज़ि विज़ि **लक्ष्मण जुवस** छु बासान॥

आकाश वाऽन्य् मंज़ पानुँ शक्ती लोल बऽरिथ बोवनय।
छि **शयुँत्रुँह** त्वथ पज़र, स्वाऽमी राम सुँन्ज़ आश पूशनय॥
ऋद्धि सिद्धि तहत थऽविमय, ग्यान भण्डार खूलमय।
ग्वर शब्दुक सिखिम मंत्र हयत्, पानुँ **माहताब** काक सूज़मय॥

'त्रिक' शास्त्रन गाह त्राऽव ज़्यनय चाने कश्मीर मण्डलस।
त्रिपुर सुन्दरी पम्पोश फो'लराऽव मंज प्वखरिबलस॥
बीज मंत्र प्रणविथ, फुलय लऽज्य् भूः भुवः स्वः त्रभवनस।
त्रिकारणमयी पराशक्ती वास को'र यच्छ़ायि सान हृदयस॥

प्रज़लोवुथ आत्मदीव **'शिव'** कीन्दरिथ कऽरिथ साऽरी त्वथ।
परा प्रावेशिकायि, शिवसूत्र शैव आगमव सूँत्य गऽयि मुरवथ॥
'अहम्' प्राऽविथ अहंकार शो'मरिथ अऽनिथ शैव स्मरथ।
पानुँ विश्वोतीर्ण, विश्वात्मिक नच़्येव सम्पूर्ण च्य़थ हयथ॥

ज़ीव ज़गत ज़नारदन ईकोवुथ, यऽलि ह्यछिनाऽविथ प्राणायाम।
तसुँन्दि लोल फुलयि सूँत्य **इशबऽर** प्रखट्यव **'हुम-फ्राम'**॥
अष्ट सिद्धियव लोल बो'र आश्रमस, को'रुख तति विश्राम।
अमृतेश्वर भैरवन अमृत रूँफस मंज़ बाऽगराऽव नऽवि जाम॥

चाऽन्य अख अख वाऽनी छि परम ग्यानुक **स्पन्द**।
शिव सूत्र उद्यमो भैरवः, ज्ञानं बंधः छुनुँ करान बन्द॥
च़्यथ छु आत्मा - ई पाऽरिज़ान थवतम सदा अन्द वन्द।
'जया' त्रिक शास्त्र बूज़िथ छस मानान ज़ीव छु स्वछन्द॥

श्री नवदुर्गा

श्री चण्डी पूजा यन्त्रम्

लिखेद षृदलं पद्मं कुंकुमागुरुचन्दनै:

पद्म मध्ये लिखेच्चैव षट्कोणं चण्डिकामयम्।

षट्कोण चक्रमध्यस्थं आद्यं बीजत्रयं न्यसेत।

मध्यबीजे महालक्ष्मी: तद्दक्षिणे महाकाली वामे सरस्वती

पूर्वादि षट्कोण बीजान्यऽ न्यानि न्यसेत्॥

चण्डी छि सप्तशती यिहाऽय छि नवदुर्गा।
मार्कण्डेय पुराणस मंज़ छि रूजिथ यि ग्यान गंगा॥
रूॅपन नवन मंज़ छि रंगवुॅनुॅ जग़तुॅच **महामाया**।
ध्यानस मंज़ प्रज़लान, स्व माता **नव दुर्गा**॥ 1

भक्ति-ज्ञान-कर्म ह्यछ्ुॅनावान पानुॅ नव दुर्गा।
सतन भवनन मंज़ नचवुॅनुॅ बऽनिथ **सप्त मातृका**॥
कुन्य कीवल छि शक्ति, पानुॅ अन्नपूर्णा।
सती साध्वी ब्राह्मी, काऽली सो' पानुॅ दुर्गा॥ 2

सत हथ श्लूकन मंज़ रास गिन्दान पानुॅ ईश्वरी।
भूत शुद्धि - आत्म शुद्धि मंज़ रूज़िथ पानुॅ माहेश्वरी॥
नवार्ण मंत्रुॅच प्राण - प्रतिष्ठा शूबरावान सुरेश्वरी।
'**ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नम:**' छि भुवनेश्वरी॥ 3

देवी-कवच अर्गला तुॅ कीलक छु नु हुमुनुय।
कीवल लोलुॅ तुॅ माय सान यि परनुय॥
ज़पाज़पस मंज़ ज़फ छु मंत्र ज़पनुय।
रात्रीसूक्त अथर्वशीर्ष पतुॅ न्यास करुनुय॥ 4

प्रथम चरित्रुँच दीवी छि **महाकाऽली**।
गायत्री छन्द, नन्दा शक्ति सान कराऽली॥
अग्नि तत्वस ऋग्वेदस गाह त्रावान सो' विक्राऽली।
मधु-कैटभस संहार करान यूगनिद्रायि मंज **काऽली**॥ 5

दशभुजा, दशमुखा, पाददशका महाकालिका।
समाधि वैश्यस **सुरथ** राज़स घनेयि ज़ाननुँच यच्छ़ा।
क्वसुँय छि पानुँ दुर्गा बऽनिथ महामाया।
मेधा र्‌यशि बोवनख पराशक्ति छि विश्वमाया॥ 6

ब्रह्मा सुँज़ रात्रि सूक्तुँच छख आदि अर्चना।
विष्णु अवतीर्ण सपद्‌िथ कऽरुँवुँन गर्जना।
विष्णु सुँञ्ज़ वैष्णवी शक्ति छख स्वाहा।
स्वधा, वषट्कार, संध्या सावित्री तुँ महामोहा॥ 7

मध्यम चरित्रुँच शक्ती विराजमान **महालक्ष्मी**।
यजुर्वेद स्वरूपा छि वायु तत्वस मंज पानुँ दीवी॥
महिषासुर माऽरिथ छि शान्त पानय **महिषासुर मर्दिनी**॥
पम्पोशस प्यठ वास करान पानु दीवी दुर्गति-नाशिनी॥ 8

त्रन अध्यायन मंज़ छु दीवी हुन्द वरनन!
दिवताहव ति कोरमुत अऽथ्य अन्दर लोल कीरतन॥
इन्द्र सुँन्जि स्तुति मंज छु '**शब्द**' अर्थ-दरपन।
दुर्गति-दुर्गशमनी दीवी कऽरुँन भाव छि अरपन॥ 9

उत्तर चरित्रस मंज़ प्रखटान पानुँ **महा सरस्वती**।
अक्षमाला, अकुंश दारवुँनुँ सो पानुँ भगवती

महाविद्या पानुँ नचान बऽनिथ वाक् , भारती।
वाक् परावाक्स मंज़ ग्यान दायिनी शब्दुँ शक्ती॥ 10

चण्ड मुण्ड - शुम्भ निशुम्भ घातिनी पानुँ **शारदा**।
बऽनिथ छाया - दया, कान्ता तुँ पानुँ तृष्णा॥
बुद्धि, लक्ष्मी, श्रुति, शान्ति छख .चुँ चेतना।
धुम्रलोचनस, रक्तबीजस वध करुँ वुँनुँ **महामाया**॥ 11

कऽहिमि अध्यायि मंज़ स्तुति करान दिवताहगन।
सर्वबाधा शमन करान, लागुन छु चे़ कुन मन॥
'**यशोदा गर्भ सम्भवः**' नाव छु चोनुय थव अथ कुन कन
समाधि वैश्य तुँ सुरथ राज़ुँन पाऽठ्य लगाव अऽमिस कुन मन॥ 12

भीमा शक्ति भ्रामरी बीजस मंज छु चोन अवतरण।
.चुँ महामाया नवदुर्गा बऽनिथ छख आदि कारण।
शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टायि करूँ स्मरण।
कुष्माण्डा, स्कन्द माता कात्यायनी प्यो'न परन॥ 13

काल रात्री, महागौरी नाव छु शूभवुँनुँ चोनुय।
सिद्धिधात्री बऽनिथ यि तुँ मंज़ **नवरात्री** सोनुय॥ 14

दुर्गा छि चेतनायि सान पानुँ विमर्श रूपिनी।
प्राधानिक रहस्यस मंज़ वखनय छि चाऽनी॥
अवतरनुँच क्रिया छख पुरवान बऽनिथ मूर्धनी।
नाम कर्म-ज्ञान छि नुँ केंह ति यिम साऽनी॥ 15

वे'कृति रहस्यस मंज़ व्यकृतुँच छि गाथा।
त्रिगुणा - तामसी -- सात्त्विकी छख चण्डिका॥

चतुर्भुजा मूल-प्रकृति महालक्ष्मी हुॅज़ कथा।
शङ्कर - सरस्वती, मूल-कारण - महाकालिका॥ 16

विष्णु तुॅ गौरी हुन्द महाकारण छि महासरस्वती।
कर्म, कार्य तुॅ कारण सहित छख पानुॅ सती॥
नमो देव्यै महोदेव्यैः परान मेलि सद्गती।
षोडश उपचारव सूॅत्य छि चाऽन्य अस्तुती॥ 17

मूर्ति रहस्य छु **समष्टि** हुॅज़ उपासना।
चतुर्भजा महाकाऽली लक्ष्मी सरस्वती हुॅन्ज साधना॥
अष्ट भुजा, अष्टादश भुजायि सूॅत्य पानुॅ दशानना।
सम्पूर्ण विश्व छु युहुॅन्दुॅय, कऽरुॅन छि आराधना॥ 18

व्यष्टि उपासनायि मंज़ नव शक्ति करान वो'लास।
काल - मृत्यु तुॅ विनायक सुन्द छु अति वास।
इन्दिरा, कमला, श्री सुन्द मेलान आभास।
रक्तदन्तिका, शाकम्बरी पूज़ा छि मंज़ शरत् मास॥ 19

सर्व रूॅफमयी दीवी, सर्व देवमयी छु जगथ्।
सर्व चैतन्यमयी शक्ती, मूल प्रकृति छख ह्यथ॥
विश्वेश्वरी जगतधात्री, ध्यानस मंज़ यितुॅ न्यथ।
ख्यमा करतम चुॅ पानय, परज़ुनावतम सम्व्यथ॥ 20

दास छु सय चोनुय, **कलमस** करतम प्रानुॅ प्रतिष्ठा।
शब्द संचय गो.छुम आसुन, **चण्डी** रूॅफस प्यठ निष्ठा॥ 21

परा - प्रावेशिका (शयुॅत्रुॅह त्वथ)

शिव शब्दस अर्थ व्यछ़नोव पानुॅ **ईश्वर स्वरूपन**।
प्रमाता, प्रमा, प्रमेय तुॅ प्रमति हयॅछुनाऽविन क्षण क्षण।
'**संवित्**' छु शैवी कार्य, यो'होय गव पानुॅ कारण।
'**प्रकाशस**' सूत्य '**विमर्श**', यो'होय छु तरन - तारन॥ 1

यो'दवय 'प्रकाशस' मंज़ 'विमर्श' आसि हे नुॅ ज़न।
करून, न करून, अन्यथा करून आसेह त्यलि ज़ड मन॥
चित, चैतन्युक 'भाव' रूप विमर्शस मंज़ अन।
'**परावाक्**' छि परावाऽणी अऽथि वनान स्फुरण॥ 2

'**शब्दस**' म्यूल '**अर्थ**', अर्थन होव विमर्शुक व्यस्तारूॅय।
'**स्वतंत्र**' शक्ति छि ऐश्वर्य, अऽथि वनान स्फुरण - प्रसारूॅय॥
'**हृदय**' शब्द छु अम्युक विशेषण, हृदयुॅ छु सारूॅय।
परात्रिंशिकायि मंज़ '**स्पन्द**' गव ज़गतुक आधारूॅय। 3

सु ब्रह्म छु परम श्वद, अभीद, सो'म तुॅ सकलुॅय।
अमृतवर्णा शक्ति बनावान कर्मस पानुॅ प्रबलुॅय॥
तवय ज़गत छु दृश्यमान, आसिहे न तुॅ निष्कलुॅय।
यो'दवय सु '**ब्रह्म**' कर्त्ता ब,निथ कर्म करिहे नुॅ सकलुॅय॥ 4

अऽमिच वखनय शैवस मंज़ शान्त तुॅ काऽच़ाह स्वन्दरुॅय।
विश्वोतीर्ण विश्वमयुक प्रपंच छु पनुन मन-मन्दरूॅय॥
शयुॅत्रुॅह तत्व छि सार विश्वुॅक सऽमिथ दीहस अन्दरूॅय।
खसवुन तुॅ वसवुन छु अऽम्युक क्रम बऽनिथ आरोहन अवरोहनुॅय॥ 5

परिपूर्ण आनन्द भाव छु पानुॅ तऽमिस **परम शिवस**।
लयि मंज़ अनुन सु वनान '**त्रिक**', व्याप्त युस विश्व आत्मकस॥
इच्छा क्रिया ग्यानुक ईकुत छु मंज़ तथ '**शिव**' तत्वस।
'**शक्ति**' तत्वस मंज़ ज़ीर लगान यच्छ़ायि हुँदिस स्पन्दस।

यच्छ़ायि तसुॅन्दि काँह नुॅ प्रीरित करान तथ '**सदा शिव**' तत्वस॥
अकुंर छु नेरान, फुलय छि लगान तऽमिस त्वथ रूपी '**ईश्वरस**'।
'**शुद्ध-विद्यायि**' मंज़ 'अहम् तुॅ इदम्' प्रकट सपदान अथ तत्वस॥
'**मायायि**' मंज़ द्वैयुत छु टाकार, तिहिज लगान भीद भावस।

'**कला**' तत्व हीथ बनान, काँह काऽम नियमुॅ सान करनस॥
'**विद्या**' कुनि सीमायि तान्येॅथ, ज़ान थावनावान ज़ाननस।
'**राग**' छि आसक्ती चो़'पाऽर्‍य थऽविथ यथ दीहस तुॅ ज़गतस॥
'**काल**' तत्वस मंज़ काल कलनावान अन्तर् तुॅ बहिर् समयस।

'**नियति**' - छुम करुन या नुॅ करुन, वनान अथ संकूच़ भावस॥
शैवन नाव द्युत '**पंच कंचुक**' - इम च़ऽमरिथ रोज़ान आवरणस।
गुफिथ रोज़ान मायायि मंज़ परमेश्वर अथ '**पुरुष**' तत्वस॥
'**प्रकृति**' मंज़ वास करान '**महत्**' सो'म्बराऽविथ मूल कारणस।

'**बुद्धि**' छि निश्चय करनुॅच मेधा, वुछान पननिस प्रतिबिम्भस॥
यि ति म्योन, छुनुॅ म्योन-बऽसिथ तु लऽसिथ छि अथ '**अहंकारस**'।
संकल्प तुॅ विकल्प छि साऽरी ग्रायि मारान सूॅत्य '**मनस**'॥
बुद्धि - अहंकार तुॅ मन छु वलनुॅ आमुत मंज़स '**अन्तः करनस**'।

'**श्रोत्र**' सूॅत्य शब्द छि बोज़ान धुन ध्वनि श्रो'न्य इवान कनस।
'**त्वक्**' गऽयि त्व.छुॅ अथवा त्वचा, करनावान युस सुॅपरशस॥
'**चक्षु**' छि न्येथुॅर साऽनी, कारण बनान ज़गत वुछनस।
'**जिह्वा**' साऽन्य् ज़्यव, चो़'क मो'दुर ट्योठ स्वाद करनस॥

'घ्राण' छि नस बऽन्योमुॅत यि त्वथ कीवल मुशुॅक ह्यनस।
यिमन वनान **पंच ज्ञानेन्द्रिय** यिमय छि सान्ये ह्यस तुॅ न्यस॥
'वाऽनी' मंजुॅ नेरान शब्द **'वाक्'** बऽनिथ प्रथ अऽकिस शब्दस।
अथस वनान **पाणि,** टाकार कर्म करानावन मंज़ ज़गतस॥

'पादव' सूत्य पकुन छु पानय, गतुॅग्यूर तुलान सम्सारस।
'पायु' किन्य न्येरान मल न्ये॑बर, श्वो॑द्ध थऽवुॅन मलद्वारस।
'उपस्थान' गव जनन-इन्द्रिय, सृष्टि हुॅन्ज वथ ज़ान उपस्थानस॥
त्रिक शास्त्रन वो॑न अथ कर्म-इन्द्रिय, आवश्यक छि क्रिया सादुॅनस।

शब्द-स्पर्श-रूप-रस तुॅ गन्ध छि तन्मात्रायि सीमिथ पननिस रूॅपस।
आकारुॅ किन्युॅ सामान्य आऽसिथ सहायक छि यिम कर्म ज़ाननस॥
'आकाश' तत्व गव अवकाशप्रद, **'शून्य'** नाव प्यव अथ **'स्थानस'**।
'वायु' तत्व छु सञ्जीवनी, ज़ानुन छु यि मंज प्राण - अपानस।

'वह्नि' गव वुहुन, अग्नुक दज़ुन, दज़ान मंत्र नार तत्वस।
'सलिल' छु पो॑न्य, श्रवान छु बो॑न, ज़ानुन मंज यि अऽदुॅ रेरस॥
'भूमि' छि पृथिवी, बुतुॅराथ-धरित्री बऽनिथ साऽरिसुॅय धारनस।
अवरोहनुॅक यिम शयुॅत्रुह त्वथ क्याह छि सो॑न्दुॅरुॅय आसनस॥

'शिव' प्यठुॅ बुतॅराऽच़ तान्यथ ब्यो॑न ब्यो॑न छिनुॅ गो॑न्दुॅरुॅद।
ज़गतुक आरोहन ति छुय पानुॅ अऽथि अन्दुॅरय॥
परा - प्रावेशिका छय बऽसिथ यथ नाव मनुॅ - मन्दुॅरुॅय।
श्यत्रुॅह त्वथ छि साऽन्य सृष्टि स्थिति संहारूॅक अंग आसवुॅनुॅय॥

चमल लाल रैना

शान्ति मंत्र

ऊँ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर विश्वे देवा:, शान्तिर ब्रह्म शान्ति:, सर्व शान्ति: शान्तिरेव शान्ति, सा मा शान्तिरेधि॥ ऊँ शान्ति:, शान्ति:, शान्ति:।
सर्वारिष्ट - सुशान्तिर्भवतु।

यजुर्वेद 36 : 817

ओ३म्

शाऽन्ती चॊ॑वापाऽर्य यियुॅतन
अऽसि ति रोज़व शान्त
शिन्याह सान ह्ये॑रि नबुॅ,
अऽस्य प्ये॑ठ रुज़ितन शान्त।
सूॅत्य ह्यथ सम्पूर्ण बुतुॅराथ ...,
अऽस्य थऽवितन शान्त॥
साऽरी सर-सरोवर तुॅ नदी ...,
अऽस्य प्ये॑ठ रूज़ितन शान्त।
सर्व - ओशऽदी वनस्पती
पानुॅ रुज़ितन पानय शान्त॥
दिवताह-वशिदीव साऽरी पानय ...,
पानुॅ ब्रह्म बऽवितन शान्त।
ह्ये॑रि बों॑नु यिति केंछ़ा,
ति-ति गऽछ़ितन सर्वत्र शान्त॥
सो' शान्ती यऽति पानुॅ इयतन ...,
स्वऽति बऽनितन शान्त।
शाऽन्ती शाऽन्ती कीवल शाऽन्ती
गऽछ़ितन साऽरी अरिष्ट शान्त।

About Bija-Akshara

Bija is the Primal seed and Akshara is the Immutable Phoneme. Bija-Aksharas are the Primal vibrations of Divinity, created through the Ichhā-Shakti of Absolute-the Sat-Chit-Ananda.

Bija-Mantras are the subtle forces of 'Shabda-Sharira' of the Divinity. Kashmir Shaktivad establishes the Bija mantra with Para-Prakriti. It is the Samvit-Shakti of the CHAKRESHVARA, and the evolutionary process of Sadhaka's identity with the Divinity.

Jaya Sibu Raina has explained the Bija and Akshara thorough Bhakti, in this poetic work.

Chaman Lal Raina